कहानी

लिहाफ़

इस्मत चुगताई

जब मैं जाड़ों में लिहाफ़ ओढ़ती हूं तो पास की दीवार पर उसकी परछाई हाथी की तरह झूमती हुई मालूम होती है। और एकदम से मेरा दिमाग बीती हुई दुनिया के पर्दों में दौड़ने-भागने लगता है। न जाने क्या कुछ याद आने लगता है।

माफ़ कीजिएगा, मैं आपको ख़ुद अपने लिहाफ़ का रूमानी ज़िक्र बताने नहीं जा रही हूं, न लिहाफ़ से किसी क़िस्म का रूमान जोड़ा ही जा सकता है। मेरे ख़याल में कम्बल कम आरामदेह सही, मगर उसकी परछाई इतनी भयानक नहीं होती जितनी-जब लिहाफ़ की परछाई दीवार पर डगमगा रही हो। यह जब का ज़िक्र है, जब मैं छोटी सी थी और दिन-भर भाइयों और उनके दोस्तों के साथ मार-कुटाई में गुज़ार दिया करती थी। कभी-कभी मुझे ख़याल आता कि मैं कमबख़्त इतनी लड़ाका क्यों थी? उस उम्र में जबकि मेरी और बहनें आशिक़ जमा कर रही थीं, मैं अपने-पराये हर लड़के और लड़की से जूतम-पैजार में मशगूल थी।

यही वजह थी कि अम्मा जब आगरा जाने लगीं तो हफ़्ता-भर के लिए मुझे अपनी एक मुंहबोली बहन के पास छोड़ गयीं। उनके यहां, अम्मा खूब जानती थीं कि चूहे का बच्चा भी नहीं और मैं किसी से भी लड़-भिड़ न सकूंगी। सज़ा तो खूब थी मेरी! हां, तो अम्मा मुझे बेगम जान के पास छोड़ गयीं। वही बेगम जान जिनका लिहाफ़ अब तक मेरे ज़ेहन में गर्म लोहे के दाग की तरह महफ़ूज़ है। ये वो बेगम जान थीं जिनके गरीब मां-बाप ने नवाब साहब को इसलिए दामाद बना लिया कि वह पकी उम्र के थे मगर निहायत नेक। कभी कोई रण्डी या बाज़ारी औरत उनके यहां नज़र न आयी। खुद हाजी थे और बहुतों को हज करा चुके थे।

मगर उन्हें एक निहायत अजीबो-गरीब शौक था। लोगों को कबूतर पालने का जुनून होता है, बटेरें लड़ाते हैं, मुर्ग़बाजी करते हैं- इस क़िस्म के वाहियात खेलों से नवाब साहब को नफ़रत थी। उनके यहां तो बस रहते थे नौजवान, गोरे-गोरे पतली कमरों के लड़के, जिनका ख़र्च वे खुद बर्दाश्त करते थे।

मगर बेग़म जान से शादी करके तो वे उन्हें कुल साज़ो-सामान के साथ ही घर में रखकर भूल गये। और वह बेचारी दुबली-पतली नाज़ुक सी बेगम तन्हाई के गम में घुलने लगीं। न जाने उनकी ज़िन्दगी कहां से शुरू होती है? वहां से जब वह पैदा होने की गलती कर चुकी थीं, या वहां से जब वह एक नवाब की बेगम बनकर आयीं और छपरखट पर ज़िन्दगी गुज़ारने लगीं, या जब से नवाब साहब के यहां लड़कों का ज़ोर बंधा। उनके लिए हलवे और लज़ीज़ खाने जाने लगे और बेगम जान दीवानख़ाने की दरारों में से उनकी लचकती कमरोंवाले लड़कों की चुस्त पिण्डलियां और बारीक शबनम के कुर्ते देख-देखकर अंगारों पर लोटने लगीं।

तब से वह मन्नतों-मुरादों से हार गयीं, चिल्ले बंधे और टोटके और रातों के इंतज़ार भी चित हो गए। कहीं पत्थर में जोंक लगती है! नवाब साहब अपनी जगह से टस-से-मस न हुए। फिर बेगम जान का दिल टूट गया और वह इल्म की तरफ झुक गईं। लेकिन यहां भी उन्हें कुछ न मिला। रूमानी नावेल और जज़्बाती शेर पढ़कर और भी पस्ती छा गयी। रात की नींद भी हाथ से गयी और बेगम जान जी-जान छोड़कर बिल्कुल ही हसरतों की पोट बन गयीं।

चूल्हे में डाला था ऐसा कपड़ा-लत्ता। कपड़ा पहना जाता है किसी पर रोब गांठने के लिए। अब न तो नवाब साहब को फुर्सत कि शबनमी कुर्तों को छोड़कर ज़रा इधर ध्यान करें और न वे उन्हें कहीं अपने-जाने देते। जब से बेगम

जान ब्याहकर आयी थीं, रिश्तेदार आकर महीनों रहते और चले जाते, मगर वह बेचारी क़ैद की क़ैद रहतीं।

उन रिश्तेदारों को देखकर और भी उनका ख़ून जलता था कि सबके-सब मज़े से माल उड़ाने, उम्दा घी निगलने, जाड़े का साज़ो-सामान बनवाने आन मरते और वह बावजूद नयी रूई के लिहाफ़ के, सर्दी में अकड़ा करतीं। हर करवट पर लिहाफ़ नयी-नयी सूरतें बनाकर दीवार पर साया डालता। मगर कोई भी साया ऐसा न था जो उन्हें ज़िन्दा रखने के लिए काफ़ी हो। मगर क्यों जिये फिर कोई? ज़िन्दगी! बेगम जान की ज़िन्दगी जो थी! जीना बदा था नसीबों में, वह फिर जीने लगीं और खूब जीं।

रब्बो ने उन्हें नीचे गिरते-गिरते संभाल लिया। चटपट देखते-देखते उनका सूखा जिस्म भरना शुरू हुआ। गाल चमक उठे और हुस्न फूट निकला। एक अजीबो-गरीब तेल की मालिश से बेगम जान में ज़िन्दगी की झलक आयी। माफ़ कीजियेगा, उस तेल का नुस्ख़ा आपको बेहतरीन-से बेहतरीन रिसाले में भी न मिलेगा।

जब मैंने बेगम जान को देखा जो वह चालीस-बयालीस की होंगी। ओफ्फोह! किस शान से वह मसनद पर टिकीं थीं और रब्बो उनकी पीठ से लगी बैठी कमर दबा रही थी। एक ऊदे रंग का दुशाला उनके पैरों पर पड़ा था और वह महारानी की तरह शानदार मालूम हो रही थीं। मुझे उनकी शक्ल बेइन्तहा पसन्द थी। मेरा जी चाहता था, घण्टों बिल्कुल पास से उनकी सूरत देखा करूं। उनकी रंगत बिल्कुल सफ़ेद थी। नाम को सुर्ख़ी का ज़िक्र नहीं। और बाल स्याह और तेल में डूबे रहते थे। मैंने आज तक उनकी मांग ही बिगड़ी न देखी। क्या मजाल जो एक बाल इधर-उधर हो जाये। उनकी आंखें काली थीं और भंवे कमानें-सी खिंची होती थीं। आंखें ज़रा तनी हुई रहती थीं। भारी-भारी फूले हुए पपोटे, मोटी-मोटी पलकें। पर सबसे ज़्यादा जो उनके चेहरे पर खूबसूरत चीज़ थी, वह उनके होंठ थे। वह सुर्ख़ी से रंगे रहते थे। ऊपर के होंठ पर हल्की-हल्की मूंछें-सी थीं और कनपटियों पर लम्बे-लम्बे बाल। कभी-कभी उनका चेहरा देखते-देखते अजीब सा लगने लगता था-कम उम्र लड़कों-जैसा।

उनके जिस्म की खाल भी सफ़ेद और चिकनी थी। मालूम होता था किसी ने कसकर टांके लगा दिए हों। जब वह अपनी पिण्डलियां खुजातीं तो मैं चुपके-चुपके उनकी चमक देखा करती। उनका कद बहुत लम्बा था और फिर गोश्त होने की वजह से वह बहुत सी लम्बी-चौड़ी मालूम होती थीं। लेकिन बहुत तराशा और ढला हुआ जिस्म था। बड़े-बड़े चिकने और सफ़ेद हाथ और सुडौल कमर... तो रब्बो उनकी पीठ खुजाया करती थी। यानी घण्टों उनकी पीठ खुजाती-पीठ खुजाना भी ज़िन्दगी की ज़रूरतों में था, बल्कि शायद ज़िन्दगी से भी ज़्यादा ज़रूरी।

रब्बो को घर का और कोई काम न था। बस वह सारे वक्त उनके छपरखट पर चढ़ी कभी पैर, कभी सिर और कभी जिस्म के और दूसरे हिस्से को दबाया करती थी। कभी तो मेरा दिल बोल उठता था, जब देखो रब्बो कुछ न कुछ दबा रही है या मालिश कर रही है। कोई दूसरा होता तो न जाने क्या होता? मैं अपना कहती हूं, कोई इतना करे तो मेरा जिस्म तो सड़-गल के ख़त्म हो जाय।

और फिर यह रोज़-रोज़ की मालिश काफ़ी नहीं थी। जिस रोज़ बेगम जान नहातीं, या अल्लाह! बस दो घंटा पहले से तेल और खुशबूदार उबटनों की मालिश शुरू हो जाती। कमरे के दरवाज़े बन्द करके अंगीठियां सुलगतीं और चलता मालिश का दौर। वहां सिर्फ़ रब्बो ही रहती। बाकी की नौकरानियां बड़बड़ातीं, दरवाज़े पर से ही, ज़रूरत की चीज़ें देती जातीं।

बात यह थी कि बेगम जान को खुजली का रोग था। बेचारी को ऐसी खुजली होती थी कि हज़ारों तेल और उबटन मले जाते थे, मगर खुजली थी कि कायम। डाक्टर-हकीम कहते, ‘कुछ भी नहीं, जिस्म साफ़ चट पड़ा है। हां, कोई अन्दर बीमारी हो तो खैर।’ ‘नहीं भी, ये डॉक्टर तो हैं पागल! अल्लाह रखे, ख़ून में गर्मी है!’ रब्बो मुस्कराकर कहती, महीन-महीन नज़रों से बेगम जान को घूरती! ओह यह रब्बो! जितनी यह बेगम जान गोरी थीं उतनी ही यह काली। जितनी बेगम जान

सफ़ेद थीं, उतनी ही यह सुर्ख़। बस जैसे तपाया हुआ लोहा। हल्के-हल्के चेचक के दाग। गठा हुआ ठोस जिस्म। फुर्तीले छोटे-छोटे हाथ। कसी हुई छोटी-सी तोंद। बड़े-बड़े फूले हुए होंठ, जो हमेशा नमी में डूबे रहते और जिस्म में से अजीब घबराने वाली बू। और ये नन्हें-नन्हें फूले हुए हाथ किस क़दर फुर्तीले थे! अभी कमर पर, तो वह लीजिए फिसलकर गये कूल्हों पर! वहां से रपटे रानों पर और फिर दौड़े टखनों की तरफ़! मैं तो जब कभी बेगम जान के पास बैठती, यही देखती कि अब उसके हाथ कहां हैं और क्या कर रहे हैं?

गर्मी-जाड़े बेगम जान हैदराबादी जाली के कुर्ते पहनतीं। गहरे रंग के पाजामे और सफ़ेद झाग-से कुर्ते। और पंखा भी चलता हो, फिर भी वह हल्की दुलाई ज़रूर जिस्म पर ढके रहती थीं। उन्हें जाड़ा बहुत पसन्द था। जाड़े में मुझे उनके यहां अच्छा मालूम होता। वह हिलती-डुलती बहुत कम थीं। कालीन पर लेटी हैं, पीठ खुज रही है, मेवे चबा रही हैं और बस! रब्बो से दूसरी सारी नौकरानियां खार खाती थीं। चुड़ैल बेगम जान के साथ खाती, साथ उठती-बैठती और माशा अल्लाह! साथ ही सोती थी! रब्बो और बेगम जान आम जलसों की दिलचस्प रौनक थीं। जहां उन दोनों का ज़िक्र आया और कहकहे उठे। लोग न जाने क्या-क्या चुटकुले उड़ाते, मगर वह दुनिया में किसी से मिलती ही न थी। वहां तो बस वह थीं और उनकी खुजली!

मैंने कहा कि उस वक़्त मैं काफ़ी छोटी थी और बेगम जान पर फिदा। वह भी मुझे बहुत ही प्यार करती थीं। इत्तफाक से अम्मा आगरा गयीं। उन्हें मालूम था कि अकेले घर में भाइयों से मार-कुटाई होगी, मारी-मारी फिरूंगी, इसलिए वह हफ्ता-भर के लिए बेगम जान के पास छोड़ गयीं। मैं भी ख़ुश और बेगम जान भी ख़ुश। आख़िर वह अम्मा की भाभी बनी हुई थीं।

सवाल यह उठा कि मैं सोऊं कहां? कुदरती तौर पर बेगम जान के कमरे में। लिहाज़ा मेरे लिए भी उनके पलंग से लगाकर छोटी-सी पलंगड़ी डाल दी गयी। दस-ग्यारह बजे तक तो बातें करते रहे। मैं और बेगम जान चांस खेलते रहे और फिर मैं सोने के लिए अपने पलंग पर चली गयी। और जब मैं सोयी तो रब्बो वैसी ही बैठी उनकी पीठ खुजा रही थी। 'भंगन कहीं की!' मैंने सोचा। रात को मेरी एकदम से आंख खुली तो मुझे अजीब तरह का डर लगने लगा। कमरे में घुप अंधेरा। और उस अंधेरे में बेगम जान का लिहाफ़ ऐसे हिल रहा था, जैसे उसमें हाथी बन्द हो!

"बेगम जान!"

मैंने डरी हुई आवाज़ निकाली। हाथी हिलना बन्द हो गया। लिहाफ़ नीचे दब गया।

"क्या है? सो जाओ।"

बेगम जान ने कहीं से आवाज़ दी।

"डर लग रहा है।"

मैंने चूहे की-सी आवाज़ से कहा।

"सो जाओ। डर की क्या बात है?

"तुम्हारे पास आ जाऊं बेगम जान?"

"नहीं बेटी, सो रहो।" ज़रा सख़्ती से कहा।

और फिर दो आदमियों के खुसुर-फुसुर करने की आवाज़ सुनायी देने लगी। हाय रे! यह दूसरा कौन? मैं और भी डरी।

"बेगम जान, चोर-वोर तो नहीं?"

"सो जाओ बेटा, कैसा चोर?"

रब्बो की आवाज़ आयी। मैं जल्दी से लिहाफ़ में मुंह डालकर सो गयी। सुबह मेरे ज़ेहन में रात के ख़ौफ़नाक नज़ारे का ख़याल भी न रहा। मैं हमेशा की वहमी हूं रात को डरना, उठ-उठकर भागना और बड़बड़ाना तो बचपन में रोज़ ही होता था। सब तो कहते थे, मुझ पर भूतों का साया हो गया है। लिहाज़ा मुझे ख़याल भी न रहा। सुबह को लिहाफ़ बिल्कुल मासूम नज़र आ रहा था। मगर दूसरी रात मेरी आंख खुली तो रब्बो और बेगम जान

में कुछ झगड़ा बड़ी ख़ामोशी से पलंग पर ही तय हो रहा था। और मेरी समझ में न आया कि क्या फ़ैसला हुआ? रब्बो हिचकियां लेकर रोयी, फिर बिल्ली की तरह सपड़-सपड़ चाटने-जैसी आवाज़ें आने लगीं, ऊंह! मैं तो घबराकर सो गयी।

आज रब्बो अपने बेटे से मिलने गयी हुई थीं। वह बड़ा झगड़ालू था। बहुत कुछ बेगम जान ने किया-उसे दुकान करायी, गांव में लगाया, मगर वह किसी तरह मानता ही नहीं था। नवाब साहब के यहां कुछ दिन रहा, खूब जोड़े भी बने, पर न जाने क्यों ऐसा भागा कि रब्बो से मिलने भी न आता। लिहाज़ा रब्बो ही अपने किसी रिश्तेदार के यहां उससे मिलने गयी थी। बेगम जान न जाने देतीं, मगर रब्बो भी मजबूर हो गयी।

सारा दिन बेगम जान परेशान रहीं। उनका जोड़-जोड़ टूटता रहा। किसी का छूना भी उन्हें न भाता था। उन्होंने खाना भी न खाया ओर सारा दिन उदास पड़ी रहीं।

"मैं खुजा दूं बेगम जान?"

मैंने बड़े शौक से ताश के पत्ते बांटते हुए कहा। बेगम जान मुझे गौर से देखने लगीं।

"मैं खुजा दूं? सच कहती हूं!"

मैंने ताश रख दिये।

मैंने थोड़ी देर तक खुजाती रही और बेगम जान चुप लेटी रहीं।

दूसरे दिन रब्बो को आना था, मगर वह आज भी ग़ायब थी। बेगम जान का मिज़ाज चिड़चिड़ा होता गया। चाय पी-पीकर उन्होंने सिर में दर्द कर लिया।

मैं फिर खुजाने लगी उनकी पीठ-चिकनी मेज़ की तख्ती-जैसी पीठ। मैं हौले-हौले खुजाती रही। उनका काम करके कैसी खुशी होती थी!

"ज़रा ज़ोर से खुजाओ। बन्द खोल दो।" बेगम जान बोलीं, "इधर... ऐ है, ज़रा नीचे...हां...वाह भई वाह! हा! हा!" वह ठंडी-ठंडी सांसें लेने लगीं।

"और इधर...हालांकि बेगम जान का हाथ खूब जा सकता था, मगर वह मुझसे ही खुजवा रही थीं। "यहां...ओइ! तुम तो गुदगुदी करती हो...वाह!" वह हंसीं। मैं बाते भी कर रही थी खुजा भी रही थी।

"तुम्हें कल बाज़ार भेजूंगी। क्या लोगी? वही सोती-जागती गुड़िया?"

"नहीं बेगम जान, मैं तो गुड़िया नहीं लेती। क्या बच्चा हूं अब मैं?"

"बच्चा नहीं तो क्या बूढ़ी हो गयी?" वह हंसीं "गुड़िया नहीं तो बनवा लेना कपड़े, पहनाना खुद। मैं दूंगी तुम्हें बहुत से कपड़े। सुना?" उन्होंने करवट ली।

"अच्छा।" मैंने जवाब दिया।

"इधर..." उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर जहां खुजली हो रही थी, रख दिया। जहां उन्हें खुजली मालूम होती, वहां मेरा हाथ रख देतीं। और मैं बेख़याल में, गुड़िया के ध्यान में डूबी मशीन की तरह खुजाती रही और वह बातें करती रहीं।

"सुनो तो...तुम्हारी फ्राकें कम हो गयी हैं। कल दर्ज़ी को दे दूंगी, कि नयी सी लाये। तुम्हारी अम्मा कपड़ा दे गयी हैं।"

"वह लाल कपड़े की नहीं बनवाऊंगी। चमारों-जैसा है!" मैं बकवास कर रही थी और हाथ न जाने कहां-से-कहां पहुंचा। बातों-बातों में मुझे मालूम भी न हुआ। बेगम जान तो चुप लेटी थीं। "अरे!" मैंने जल्दी से हाथ खींच लिया।

"ओई लड़की! देखकर नहीं खुजाती। मेरी पसलियां नोचे डालती है!" बेगम जान शरारत से मुस्करायीं और मैं झेंप गयी।

"इधर आकर मेरे पास लेट जा।"

"उन्होंने मुझे बाजू पर सिर रखकर लिटा लिया।"

"अय है, कितनी सूख रही है। पसलियां निकल रही हैं।" उन्होंने मेरी पसलियां गिनना शुरू की।

"ऊं!" मैं भुनभुनायी।

"ओइ! तो क्या मैं खा जाऊंगी? कैसा तंग स्वेटर बना है! गरम बनियान भी नहीं पहना तुमने!"

मैं कुलबुलाने लगी।

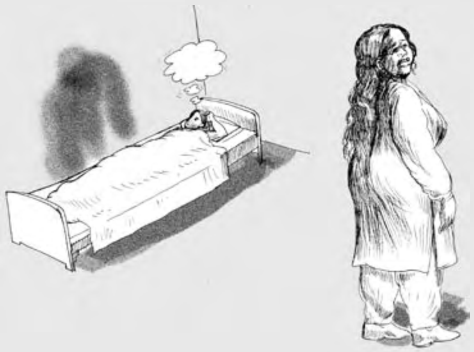

"कितनी पसलियां होती है?" उन्होंने बात बदली।

"एक तरफ नौ और दूसरी तरफ दस।"

मैंने स्कूल में याद की हुई किताब की मदद ली।

"हटाओ तो हाथ...हां, एक...दो...तीन..."

मेरा दिल चाहा किसी तरह भागूं...और उन्होंने ज़ोर से भींचा।

"ऊं!" मैं मचल गयी।

बेगम जान ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगीं।

अब भी जब कभी मैं उनका उस वक़्त का चेहरा याद करती हूं तो दिल घबराने लगता है। उनकी आंखों के पपोटे और वज़नी हो गये। ऊपर के होंठ पर स्याही घिरी हुई थी। बावजूद सर्दी के, पसीने की नन्हीं-नन्हीं बूंदें होंठों और नाक पर चमक रही थीं। उनके हाथ ठण्डे थे, मगर नरम-नरम-जैसे उन पर की खाल उतर गयी हो। उन्होंने शाल उतार दी थी और महीन कुर्ते में उनका जिस्म आटे की लोई की तरह चमक रहा था। भारी जड़ाऊ सोने के बटन गले के एक तरफ झूल रहे थे। शाम हो गयी थी और कमरे में अंधेरा घुप हो रहा था। मुझे एक अनजाने डर से दहशत-सी होने लगी। बेगम जान की गहरी-गहरी आंखें! मैं रोने लगी दिल में। वह मुझे एक मिट्टी के खिलौने की तरह भींच रही थीं। उनके गरम-गरम जिस्म से मेरा दिल मिचलाने लगा। मगर उन पर तो जैसे कोई भूत सवार था और मेरे दिमाग का यह हाल कि न चीखा जाये और न रो सकूं।

थोड़ी देर के बाद वह पस्त होकर निढाल लेट गयीं। उनका चेहरा फीका हो गया और लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगीं। मैं समझी कि अब मरी यह। और वहां से उठकर सरपट भागी बाहर।

शुक्र है कि रब्बो रात को आ गयी और मैं डरी हुई जल्दी से लिहाफ़ ओढ़ सो गयी। मगर नींद कहां? चुप घण्टों पड़ी रही।

अम्मा किसी तरह आ ही नहीं रही थीं। बेगम जान से मुझे ऐसा डर लगता था कि मैं सारा दिन नौकरों के पास बैठी रहती। मगर उनके कमरे में कदम रखते दम निकलता था। और कहती किससे, और कहती ही क्या, कि बेगम जान से डर लगता है? तो यह बेगम जान मेरे ऊपर जान छिड़कती थी...

आज रब्बो में और बेगम जान में फिर अनबन हो गयी। मेरी क़िस्मत की खराबी कहिए या कुछ और, मुझे उन दोनों की अनबन से डर लगा। क्योंकि फौरन ही बेगम जान को ख़याल आया कि मैं बाहर सर्दी में घूम रही हूं और मरूंगी निमोरिया में!

"लड़की क्या मेरा सिर मुंडवायेगी? जो कुछ हो गया और आफ़त आयेगी।"

उन्होंने मुझे पास बिठा लिया। वह खुद मुंह-हाथ में धो रही थीं। चाय तिपाई पर रखी थी।

"चाय तो बनाओ। एक प्याली मुझे भी देना।" वह तौलिया से मुंह पोंछ करके बोलीं, "मैं ज़रा कपड़े बदल लूं।"

वह कपड़े बदलती रहीं और मैं चाय पीती रही। बेगम जान नाइन से पीठ मलवाते वक़्त अगर मुझे काम से बुलातीं तो मैं गर्दन मोड़े-मोड़े जाती और वापस भाग आती। अब जो उन्होंने कपड़े बदले तो मेरा दिल उलटने लगा। मुंह मोड़े मैं चाय पीती रही।

"हाय अम्मा!" मेरे दिल ने बेकसी से पुकारा, "आख़िर ऐसा मैं भाइयों से क्या लड़ती हूं जो तुम मेरी मुसीबत..."

अम्मा को हमेशा से मेरा लड़कों के साथ खेलना नापसन्द है। कहो भला लड़के क्या शेर-चीते हैं जो निगल

जायेंगे उनकी लाडली को? और लड़के भी कौन, खुद भाई और दो-चार सड़े-सड़ाये ज़रा-ज़रा से उनके दोस्त! मगर नहीं, वह तो औरत जात को सात तालों में रखने की कायल और यहां बेगम जान की वह दहशत, कि दुनिया-भर के गुण्डों से नहीं। बस चलता तो उस वक़्त सड़क पर भाग जाती, पर वहां न टिकती। मगर लाचार थी। मजबूर कलेजे पर पत्थर रखे बैठी रही।

कपड़े बदल, सोलह सिंगार हुए, और गरम-गरम ख़ुशबुओं के इत्र ने और भी उन्हें अंगारा बना दिया। और वह चलीं मुझ पर लाड़ उतारने।

"घर जाऊंगी।"

मैंने उनकी हर राय के जबाब में कहा और रोने लगी।

"मेरे पास तो आओ, मैं तुम्हें बाज़ार ले चलूंगी, सुनो तो।"

मगर मैं फैल गयी। सारे खिलौने, मिठाइयां एक तरफ़ और घर जाने की रट एक तरफ।

"वहां भैया मारेंगे चुड़ैल!" उन्होंने प्यार से मुझे थप्पड़ लगाया।

मारने दो, मैंने दिल में सोचा और रूठी, अकड़ी बैठी रही।

"कच्ची अमियां खट्टी होती हैं बेगम जान!"

जली-कटी रब्बो ने राय दी।

और फिर उसके बाद बेगम जान को दौरा पड़ गया। सोने का हार, जो वह थोड़ी देर पहले मुझे पहना रही थीं, टुकड़े-टुकड़े हो गया। महीन जाली का दुपट्टा तार-तार। और वह मांग, जो मैंने कभी बिगड़ी न देखी थी, झाड़-झंखाड़ हो गयी।

"ओह! ओह! ओह!" वह झटके ले-लेकर चिल्लाने लगीं। मैं बाहर भागी।

बड़ी मुश्किल से बेगम जान को होश आया। जब मैं सोने के लिए कमरे में दबे पैर जाकर झांकी तो रब्बो उनकी कमर से लगी जिस्म दबा रही थी।

"जूती उतार दो।" उसने उनकी पसलियां खुजाते हुए कहा और मैं चुहिया की तरह लिहाफ़ में दुबक गयी।

सर सर फट खच!

बेगम जान का लिहाफ़ अंधेरे में फिर हाथी की तरह झूम रहा था।

"अल्लाह मैंने मरी हुई आवाज़ निकाली। लिहाफ़ में हाथी फुदका और बैठ गया। मैं भी चुप हो गयी। हाथी ने फिर लोट मचाई। मेरा रोआं-रोआं कांपा। आज मैंने दिल में ठान लिया कि ज़रूर हिम्मत करके सिरहाने का लगा हुआ बल्ब जला दूं। हाथी फिर फड़फड़ा रहा था और जैसे उकड़ूं बैठने की कोशिश कर रहा था। चपड़-चपड़ कुछ खाने की आवाज़ें आ रही थीं-जैसे कोई मज़ेदार चटनी चख रहा हो। अब मैं समझी! यह बेगम जान ने आज कुछ नहीं खाया। और रब्बो मुई तो है सदा की चट्टू! ज़रूर यह तर माल उड़ा रही है। मैंने नथुने फुलाकर सूं-सूं हवा को सूंघा। मगर सिवाय इत्र, चन्दन और हिना की गरम-गरम ख़ूशबू के और कुछ न महसूस हुआ।

लिहाफ़ फिर हिलना शुरू हुआ। मैंने बहुत चाहा कि चुप पड़ी रहूं, मगर उस लिहाफ़ ने तो ऐसी अजीब-अजीब शक्लें बनानी शुरू की कि मैं लरज गयी। मालूम होता था, गों-गों करके कोई बड़ा सा मेंढक फूल रहा है और अब उछलकर मेरे ऊपर आया!

"आ...न अम्मां!" मैं हिम्मत करके गुनगुनायी, मगर वहां कुछ सुनवाई न हुई और लिहाफ़ मेरे दिमाग़ में घुसकर फूलना शुरू हुआ। मैंने डरते-डरते पलंग के दूसरी तरफ पैर उतारे और टटोलकर बिजली का बटन दबाया। हाथी ने लिहाफ़ के नीचे एक कलाबाज़ी लगायी और पिचक गया। कलाबाज़ी लगाने में लिहाफ़ का कोना फुट-भर उठा।

अल्लाह! मैं गड़ाप से अपने बिछौने में!!!